Available online at http://www.nrjp.co.in

Journal of Industrial Relationship, Corporate Governance &Management Explorer, (e ISSN 2456-9461) Vol. 2, Issue, 02. 1-5p, August, 2018

National Research & Journal Publication

Review Article

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का उनके लिंग के सन्दर्भ में अध्ययन

सुधा राजपूत

बी0एड0 विभाग, श्री वार्ष्णेय कॉलेज, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

Abstract

बुद्धि के प्रकारों में एक प्रकार सामाजिक बुद्धि भी है सामाजिक बुद्धि से अभिप्राय व्यक्ति की वह योग्यता है जो समाज में समायोजन की क्षमता उत्पन्न करती है। सामाजिक प्राणी होने के कारण व्यक्ति को समाज में सम्बन्ध बनाने में यह बुद्धि योग्यता प्रदान करती है। जो व्यक्ति के समाज के साथ सामाजिक व्यवहार के बारे में बताता है। सामाजिक बुद्धि से युक्त व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के साथ शीघ्रता व सुगमता से समायोजन कर लेता है। इसके अभाव में व्यक्ति को सामाजिक सम्बन्ध बनाने तथा उन्हें बनाए रखने में कठिनाई होती है। **थार्नडाडक के अनुसार**– ''सामाजिक बुद्धि को एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्तियों को समझाने एवं व्यवहार की योग्यता है तथा सामाजिक व्यक्ति अन्तः क्रियाओं में संलग्न रहता है।

Copyright©2018, सुधा राजपूत *This is an open access article for the issue release and distributed under the NRJP Journals License, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.*

परिचय

'ओ' सुलीवान एट ऑल के अनुसार ''सामाजिक बुद्धि किसी व्यक्ति की भावनाओं, विचार मंशा, अभिवृत्ति और दूसरे मनोवैज्ञानिक गुणों के सन्दर्भ में आयोजित करने की योग्यता है जो कि उस व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करती है।'' प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है इस अवस्था में छात्र व छात्रायें अनेक प्रकार के मनोशारीरिक परिवर्तनों से गुजरते हुये परिपक्वता की ओर अग्रसर होते हैं।ऐसी स्थिति में उन्हें उपयुक्त निर्देशन की आवश्यकता होती ह छात्र–छात्राओं में विद्यमान सामाजिकता, मूल्य इत्यादि प्रभावित होते हैं। इसीलिये शोधकर्ती ने अपने अनुसंधान कार्य में छात्र–छात्राओं को एक महत्वपूर्ण स्वतंत्र चर के रूप में प्रस्तुत किया है।

समस्या का कथन– ''स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का उनके लिंग के सन्दर्भ में अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्य– अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति और सामान्य जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

- अनुसूचित जाति के छात्रों तथा छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- पिछड़ी जाति के छात्रों तथा छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

- सामान्य जाति के छात्रों तथा छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त शोधविधि ''सर्वेक्षण विधि'' का प्रयोग किया गया है।

प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध कार्य के लिये अलीगढ़ जनपद छात्र–छात्राओं को क्रमानुसार यादृच्छिकरण प्रतिदर्श विधि द्वारा चुना गया है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध अध्ययन में 360 छात्रों एवं 360 छात्राओं को चुना गया है। इस प्रकार प्रतिदर्श में अलीगढ़ जनपद के कुल 720 छात्र–छात्राओं को चुना गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य के लिये निम्नलिखित मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया गया है–

सामाजिक–आर्थिक स्तर का मापन करने के लिए मापनी

डॉ0 राजीव लोहचन भारद्वाज की सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी का प्रयोग किया गया है।

सामाजिक बुद्धि का मापन

करने के लिये डॉ0एन0के0 चड्ढ़ा तथा श्रीमती उषा गनेशन की सामाजिक बुद्धि मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रस्तुत शोध कार्य में एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये विशेष रूप से मध्यमान, मानक विचलन एवं मानक त्रुटि का प्रयोग किया गया है। दो समूहों के मध्य अंतर की सार्थकता को ज्ञात करने के लिये 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया

परिकल्पना का सत्यापन

परिकल्पना नं0 1 अनुसूचित जाति के छात्रों तथा छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका नं0 1

अनुसूचित जाति के छात्रों तथा छात्राओं की सामाजिक बुद्धि के मध्य अन्तर की सार्थकता को प्रदर्शित करती हुयी तालिका

समूह	संख्या	मध्यान	प्रमाणिक वि0	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
अनुसूचित जाति के छात्र	120	92.2833	9.3113	4.13	.01 स्तर पर सार्थक
अनुसूचित जाति की छात्रायें	120	97.0167	8.3825		

मध्यमानों के आधार पर ग्राफीय चित्रण

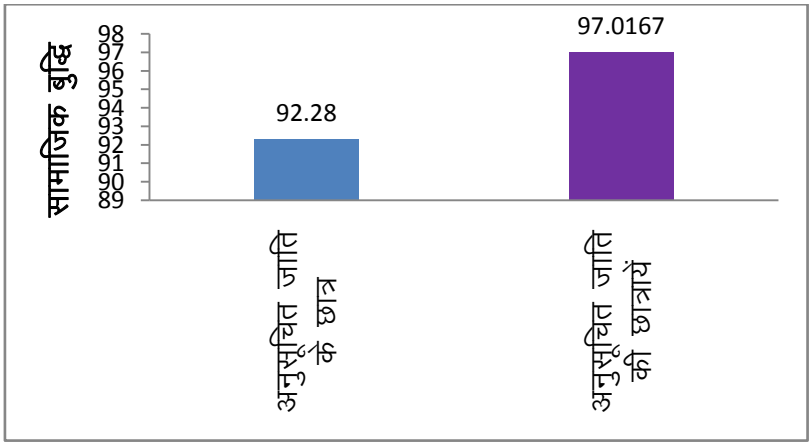

ग्राफ नं0 1: अनुसूचित जाति के छात्रों तथा छात्राओं की सामाजिक बुद्धि को प्रदर्शित करता हुआ ग्राफ

तालिका नं0 1 से स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति की छात्राओं की सामाजिक बुद्धि अनुसूचित जाति के छात्रों की अपेक्षा अधिक है। तालिका से यह भी स्पष्ट है कि मध्यमानों के मध्य अन्तर की सार्थकता का मान 4.13 जो .01 स्तर पर सार्थक है। अर्थात हम कह सकते हैं कि अनुसूचित जाति के छात्रों की सामाजिक बुद्धि अनुसूचित जाति के छात्राओं की अपेक्षा कम होती है। उपर्युक्त परिणाम के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि सामाजिक बुद्धि के सन्दर्भ में अनुसूचित जाति के छात्र, छात्राओं की अपेक्षा निम्न स्तर के होते हैं और इसी आधार पर अध्ययन की परिकल्पना नं0 1 को निरस्त किया जाता है।

परिकल्पना नं0 2 :—पिछड़ी जाति के छात्रों तथा छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका नं0 2

पिछड़ी जाति के छात्रों तथा छात्राओं की सामाजिक बुद्धि के मध्य अन्तर की सार्थकता को प्रदर्शित करती हुयी तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक वि0	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
पिछड़ी जाति के छात्र	120	95.1083	9.3685	4.3685	.01 स्तर पर सार्थक
पिछड़ी जाति की छात्रायें	120	100.55	9.9217		

मध्यमानों के आधार पर ग्राफीय चित्रण

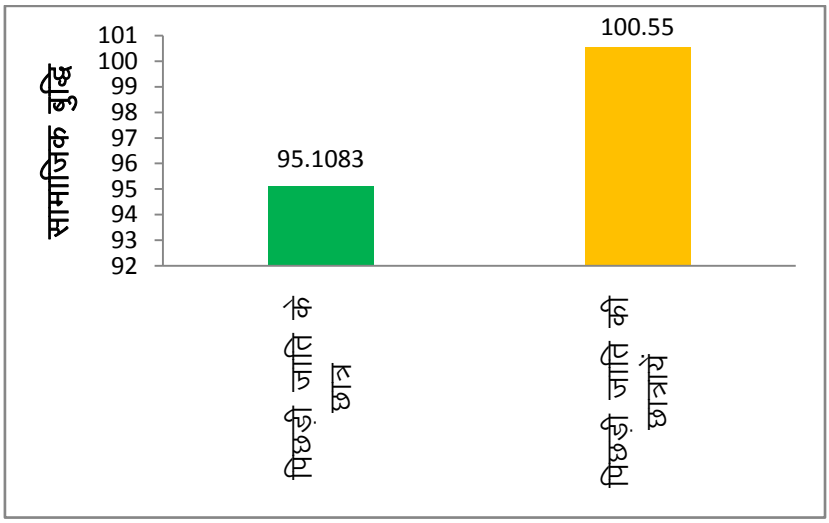

ग्राफ नं0 2: पिछड़ी जाति के छात्रों तथा छात्राओं की सामाजिक बुद्धि को प्रदर्शित करता हुआ ग्राफ

प्रस्तुत तालिका व ग्राफ से स्पष्ट है कि पिछड़ी जाति के छात्रों का मध्यमान पिछड़ी जाति की छात्राओं से कम है।अतः कहा जा सकता है कि पिछड़ी जाति की छात्राओं की सामाजिक बुद्धि पिछड़ी जाति के छात्रों की अपेक्षा अधिक है। इस तालिका में पिछड़ी जाति के छात्र एवं छात्राओं की क्रान्तिक निष्पत्ति 4.3685 है जबकि .01 स्तर पर क्रान्तिक निष्पत्ति का मान 2.58 है जो हमारी गणना की गयी

क्रान्तिक अनुपात से कम है अतः शून्य परिकल्पना नं0 2 अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना नं0 3 :—सामान्य जाति के छात्रों तथा छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका नं0 3

सामान्य जाति के छात्रों तथा छात्राओं की सामाजिक बुद्धि के मध्य अन्तर की सार्थकता को प्रदर्शित करती हुयी तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक वि0	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सामान्य जाति के छात्र	120	98.6833	10.2873	3.7813	.01 स्तर पर सार्थक
सामान्य जाति की छात्रायें	120	103.85	10.8734		

मध्यमानों के आधार पर ग्राफीय चित्रण

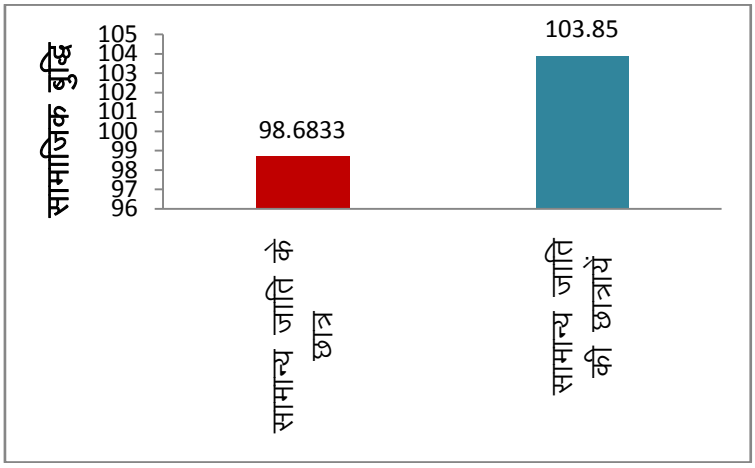

ग्राफ नं0 3: सामान्य जाति के छात्रों तथा छात्राओं की सामाजिक बुद्धि को प्रदर्शित करता हुआ ग्राफ

तालिका नं0 3 का ग्राफ से स्पष्ट है कि सामान्य जाति के छात्रों का मध्यमान 98. 6833 जबकि सामान्य जाति के छात्राओं का मध्यमान 103.85 है जो सामान्य जाति के छात्रों से अधिक है। इन दोनों समूहकी क्रान्तिक अनुपात का मान 3.7813 है जो . 01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना नं0 3 को अस्वीकृत किया जाता है।

तालिका संख्या 1, 2 एवं 3 के विवरण पर विहंगम दृष्टि डालने से यह स्पष्ट होता है कि छात्र चाहे किसी भी जाति अर्थात अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति या सामान्य जाति के क्यों न हो किन्तु उनकी सामाजिक बुद्धि का मध्यमान छात्राओं के मध्यमान से कम है तथा इनके मध्यमानोंका अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है इस संदर्भ में हम यह कह सकते हैं कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के परिणाम स्वरूप पुरूषों एवं स्त्रियों में जीवन के अनेक क्षेत्रों में समरसता एवं समन्वय लगभग समान रूप से विकसित हुये हैं किन्तु फिर भी जन्मजात एवं अर्जित दोनों ही प्रकार अनेक ऐसे पक्ष हैं ।

जिनका प्रभाव इन दोनों के जीवन दर्शन एवं जीवन शैली पर अलग—अलग ढंग से

पड़ता है छात्रों को सामाजिक जीवन के बाहरी क्षेत्रों में छात्राओं की तुलना में प्रायः कुछ अधिक लगना पड़ता है किन्तु छात्रायें पारिवारिक परिवेश में स्नेह, अमन, सुहानुभूति, सामंजस्य एवं सहयोग के भाव आदि के प्रति छात्रों की तुलना में अपेक्षाकृत कहीं अधिक चैतन्य व जागरूक रहती है क्योंकि इन्हें विकास के प्रारम्भिक वर्षों से गृह संबंधी क्रिया कलापों के संबंध में जहाँ एक ओर उपर्युक्त जानकारी दी जाती है। वही दूसरी ओर इन्हें अपने परिवेश के अनुकूल गृह कार्यों को सम्पादित करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है।

जबकि छात्रों को इस प्रकार का मार्ग दर्शन छात्राओं की तुलना में अपेक्षाकृत कम मिलता है। क्योंकि उनका संबंध बाहरी जगत से कहीं अधिक होता है यही कारण है कि छात्राओं की सामाजिक बुद्धि छात्रों की अपेक्षा अधिक होती है।

सन्दर्भ

1. अस्थाना, वी0 एस0 मनो विज्ञान और शिक्षा में और मूल्यांकन (2005), आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर पृ0सं0 480–507
2. कपिल एच0के0 सांख्यिकी के मूलतत्व, आगरा (2005), आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर पृ0 सं0 555–585
3. कपिल एच0के0 अनुसंधान विधियाँ, प्रकाशक हर प्रसाद भार्गव, आगरा
4. पाण्डेय, डॉ0 रामशकल उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, प्रकाशक आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, पृ0सं0 395–411
5. पाण्डेय, डॉ0 रामशकल शैक्षिक निबन्ध, प्रकाशक जी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, पृ0सं0 395–411
6. पाठक, पी0डी0 शिक्षा मनोविज्ञान (2005), आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर पृ0सं0 22–29
7. पाण्डेय, बी0बी0 एवं आर0 के0 सिंह शैक्षिक मान एव मूल्यांकन, वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर, 1992
8. पाण्डेय, बी0बी0 शैक्षिक और सामाजिक अनुसंधान, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, 1994
9. गुप्ता, एस0पी0 साँख्यिकीय विधियाँ, प्रकाशक शारदापुस्तकभवन 11, यूनिवर्सिटीरोड़, इलाहाबाद
10. Albrecht, K. Social Intelligence, The New Science of Success Book Description, New York, Pfeiffer Publisher
11. D. Goleman (2006) Social Intelligence the new Science of human relationship, New York: Bantam Book, p. 84.